तथा संतोष, विवेक, सौन्दर्य आदि कुछ
ऐसे मूल्य हैं भी स्वीकार किया है जिन्हें
'साध्य-मूल्य' कहा जाता है। इन विचारकों
के अनुसार भौतिक वस्तुओं के विपरीत ज्ञान,
सत्य, सौन्दर्य तथा परोपकार आदि मानसिक
अवस्थाएं किसी अन्य वस्तु के साधन के रूप
में शुभ न होकर अपने आप में शुभ अर्थात्
स्वतः साध्य शुभ होती हैं। ये अर्थात् मानसिक अव-
स्थाएं अपने परिणाम के कारण शुभ नहीं
मानी जाती हैं बल्कि नित्य अपरिवर्तनीय, देश-काल
से परे तथा परिणामनिरपेक्ष होने के कारण स्वतः
शुभ होती हैं। ~~(इनके अनुसार ये साध्य मूल्य
मनुष्य की जिन मानसिक अवस्थाओं से सम्बद्ध
होता है उनका मूल्य आदि देश काल तथा
परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होता बल्कि
केवल के लिए सदैव एवं सर्वत्र शुभ तथा
वांछनीय होती हैं।)~~
मनुष्य की कौन सी मानसिक
अवस्थाएं अपने आप में शुभ एवं वांछ-
नीय हैं इस संबंध में सुकरात, प्लेटो तथा
अरस्तू आदि आदर्शवादी दार्शनिक ज्ञान
अथवा चिंतन को ही स्वतः साध्य शुभ मानते
हैं। इसके विपरीत बेंथम मिल तथा सिजविक
आदि दार्शनिकों ने 'सुख' अथवा आनंद को
ही अपने आप में शुभ तथा वांछनीय माना
है। किन्तु Kant इन सुखवादी दार्शनिकों से

तथा सौन्दर्य, शिवम्, सत्यम् आदि कुछ
ऐसे मूल्यों को भी स्वीकार किया है जिन्हें
'साध्य-मूल्य' कहा जाता है। इन विचारकों
के अनुसार भौतिक वस्तुओं के विपरीत ज्ञान,
सत्य, सौन्दर्य तथा प्रेम आदि मानसिक
अवस्था किसी अन्य वस्तु के साधन के रूप
से शुभ न होकर अपने आप में शुभ अर्थात्
स्वतः साध्य शुभ होती है। ये मानसिक अव-
स्थाएँ अपने परिणाम के कारण शुभ नहीं
मानी जाती हैं वरन् नित्य अपरिवर्तनीय देश-काल
से परे तथा परिणामनिरपेक्ष होने के कारण स्वतः
शुभ होती हैं। (~~इसके अनुसार मनुष्य~~
~~मनुष्य की जिन मानसिक अवस्थाओं से सम्बन्ध~~
~~होता है उनका मूल्य देश काल तथा~~
~~परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होता वरन्~~
~~केवल वे लिए स्वतः शुभ तथा~~
~~वांछनीय होती है।~~)
मनुष्य की कौन सी मानसिक
अवस्थाएँ अपने आप में शुभ एवं वांछ-
नीय हैं इस संबंध में सुकरात, प्लेटो तथा
अरस्तू आदि आदर्शवादी दार्शनिक ज्ञान
अथवा चिंतन को ही स्वतः साध्य शुभ मानते
हैं किन्तु विपरीत बेंथम, मिल तथा सिजविक
आदि दार्शनिकों ने सुख अथवा आनंद को
ही अपने आप में शुभ तथा वांछनीय माना
है। किन्तु Kant एवं बुद्धिवादी दार्शनिकों के